

DPN 5730

Title: मोहनी भिकने मंत्र / MOHINI JHIKNE MANTRA

Run. No. 6421

Cat. No.

Micro. No.

Subject मंत्र Mantra

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 11.5 x 8

Folios 18

Lines (in a page) 11 irregular

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25



15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

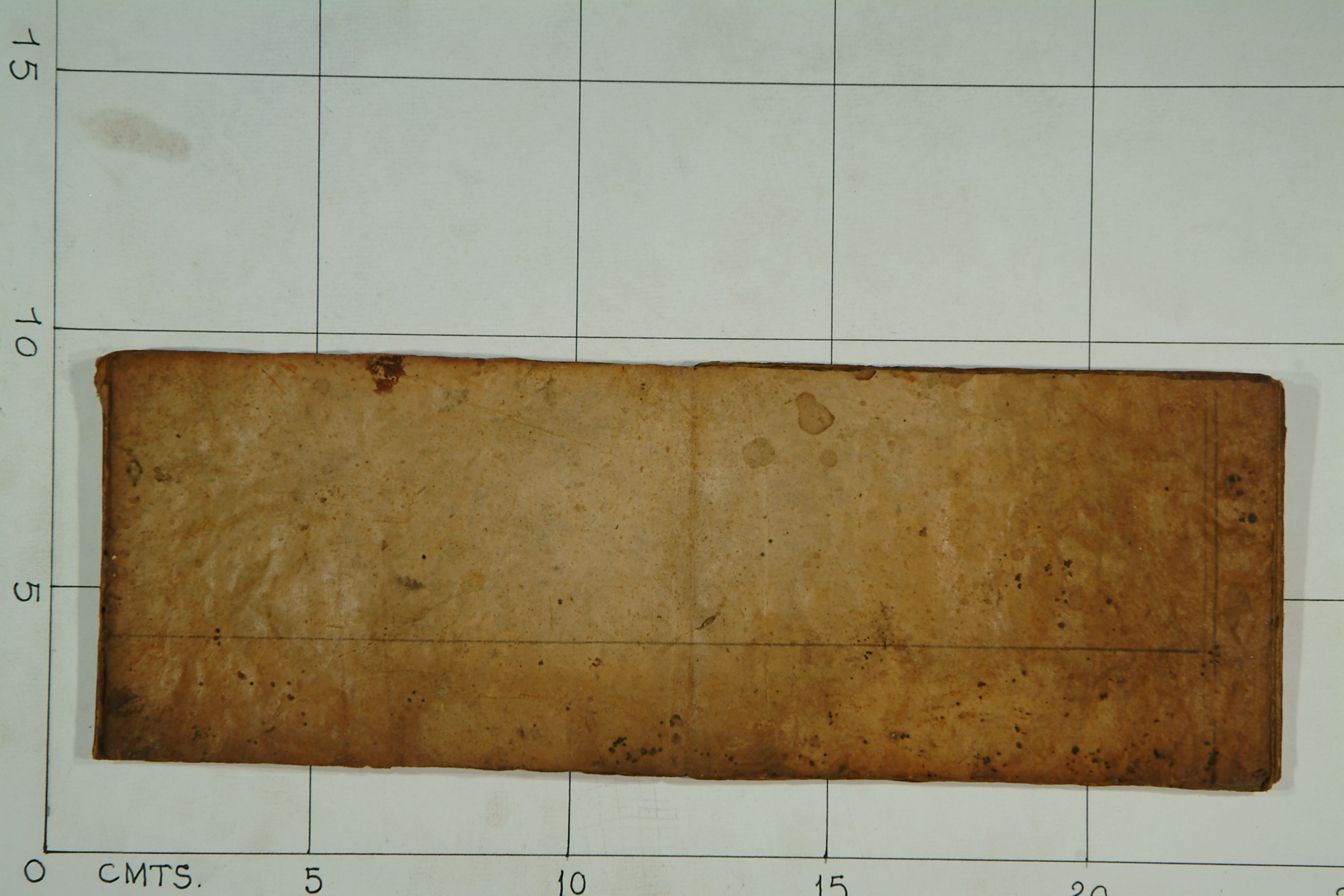
20

25



॥ मोहनीरोओक्कने मंत्र ॥
उम्मेनीगरोसाग्नम् अवती
गामाई देहीगामाई कुलगा
माई हाम्मादेहीगामाई क
मरुतामाई साध्याल महेलीदे
वीक्कोवाचा हमरा कसजोरो
उनका कसजोरो माहनी
जोरो श्रीइस्वर मनकीन्धु
देवी कोवाचा मुहळाजोरो
हानजोरो कम्बरी पलुकी

जोरो साध्यादाजल जमुना
देवी कीवाचा दमदमदम
कुलकीवाचा इगुलाफी
गुजार्फी जालार्गी वाचासा
ख्याता मेन्धुलो गार्की वाचा
इन्दुसाहीनी कीवाचा नज
र सोहानी कीवाचा नजर
देखोतासु गमिरुवाचा भू
क्कसा श्रीचपोगुरुकीवा



15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

माने परम पद पदं ओर न देखे
पाले ॥ श्रीमानि मंस देई - किरी
कुर वचन - सुकच ममा निरुपे ॥
देस्ता सेने कलार्ज ॥ परम सुख
कीर्त कुशा वरन सरुध ॥ इस्ते
क व्याप मारा द्यूत व्यत रुधिर
॥ पिता देवच नामि - नित्य निम
क्ष पाश्च ॥ बित भय हरनी - भुतना
र्ध पिशाच ॥ खरकानि मीस देहि
जब कुसु मनिदा कोटि विठु प्रभा
वा ॥ भुतानाम भुतानार्थ किरी

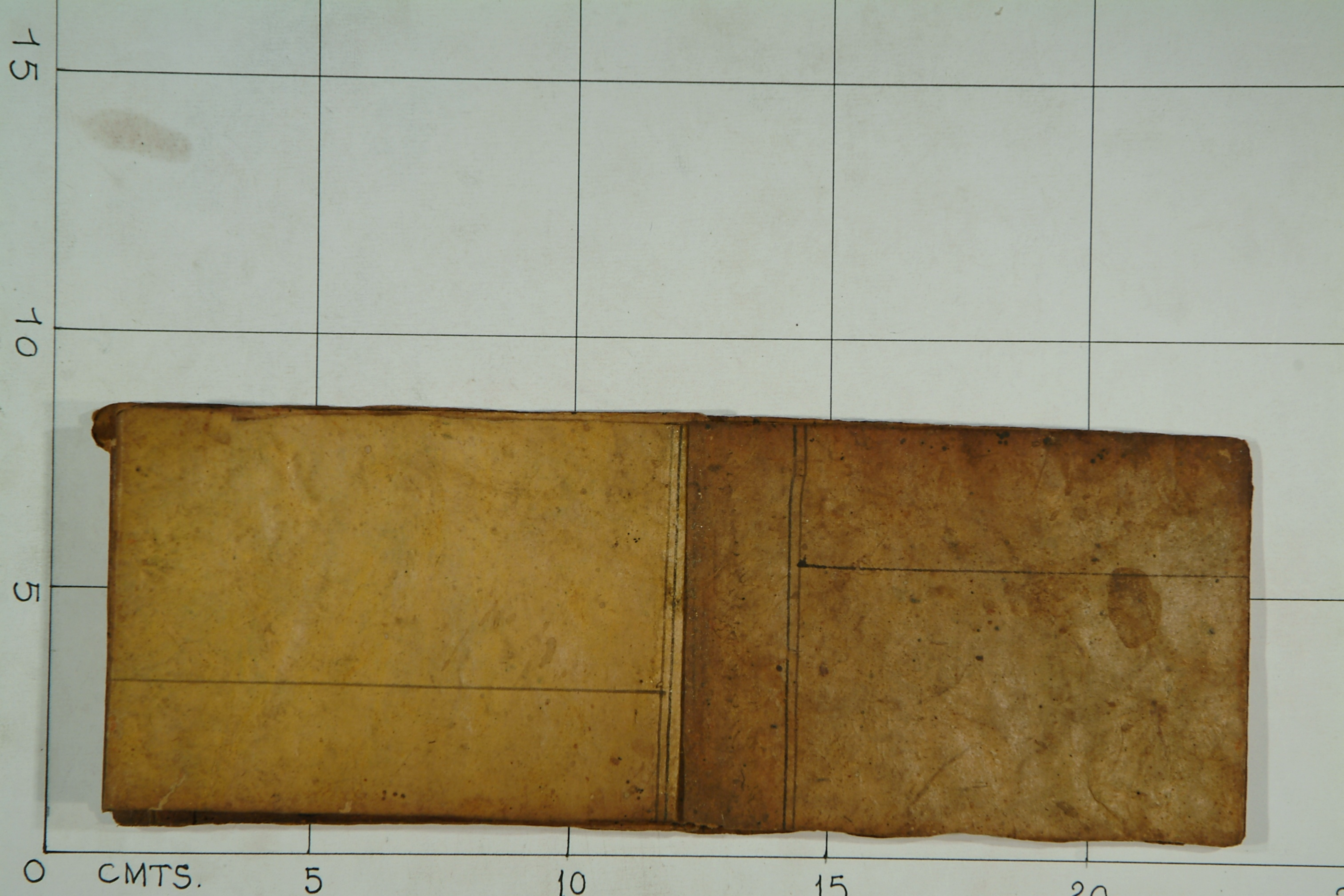
कुसु मंस्ता ॥ प्राणा व्या प्रभावा
इस्ते धाजे नि मारस नख खर
रुई ॥ विन वार्जि सुद-त देव पे
सान्ता ह्या सकल भय हरनि ॥
तान्दवी नित्य नार्थ ॥ इरुब पर
मी देव काज्य सिद्धि विनायक
सोना उय रूप र्ज च न देहि मे सु
ख र्ज पद ॥ जानार्ज जानपति
मयेव राज वस्त्र तेलोचन प्रस
न भगवतु मिमिते ॥ बल दाला
विनायक माहा कालाय वसु

वरागं समा रुढं बुधसाहास
न कर्तिक पाल धननाथ ॥
माहाकारनामासिद्ध ॥ मुध्व
विद्ध धर्चदं हीन स किं दत्ते
रवस्यरेभेदमतेः पुन्यचासा
दाता ॥ परम सुरन कृत - भोज्य
मना चिरायु पापन चाप मृत्यु
धनदुरित हर सोय माउप दत्ता
स्वयं सर्वज्ञ दाता गुरु परमज
य देव मतो न बांत्मा हाहा हुंकार
नीदे किरि तिरितरव्ये भुतव्य

ता विन्दु दुई काल समस्तानर
पि शित मुक्ते - रक्त माला कुलागे
सत्वीग सक यानि - नर कन
कन धरं नाम रुपि विरपि
॥ पिजा ह्वय पिडा केस सवरन
गमनीः देव पाल समस्तता ॥ व
ह्वा नि कम रि नि स्वोम वदनि
मादे श्वरिः रि रया नौ मारि रि
पु रि पु दे पना सन करि चक
पु विद्या नि वारादि चंद साकि
वि नरव मुधि चामु दि गग नोरि
नी दे न पाल समस्तता ॥ श्री भैर

वीक्षिता उज्ज्वलः श्रीगङ्गापुन्दरीक
ध्वजवरवरः सर्ववामरुमध्य
जुगोती हुमदकट रवि सारि
उभय द्यौहिना वृत्त संख-डो
कन्या सर्वमेरि दधि फल
कुसुमो पावनी दिप माला पु
न्य सिरौ को राजा पुन्यको यु
धिष्ठिर ॥ अश्वस्थामा वलिव्या
स मारुते तले वच कि पाप
सुरा मा श्री राम चक्र इ न मन

मनि ह्यन- अहोरा कुरपती-
सिता तारा मनो धारि स्ते
पंचकन्या सुमरु नित्य नित्य
पाप नासर्न ॥ गाम न च अनरा
भाग देवमाय विजया स्व अनु
पदे विनासाय- पुनराय गामना
यच अरु न च न सरन निरिति
तय न सरन मम । तस्मात्
कानि आर्ष्य च रदे रदे नम
स्तु ॥ ॐ नमो श्री श्री म
राय नम ॥ १५॥ १५ ॥





15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20



नमोसिक्किरुम् ॥
स्वसिक्किरुम् सदाः
आरु कसिक्कि मंत्र
नमो हासकुया वमो
ककुय कसिक्कि मन्त्र
योमि व
सिक्कि रुद्र आर्यादे
हिरि दोस आर्यादे

सिक्कि रुद्र ॥ व्यास - १ -
योमन्त्र मन्त्रे वायव
हसकता या नमि व
ककुय मिहवो न ॥ व्यास १
वहहहह को देसा ॥ आर्या
मन्त्रे वास मन्त्र गारिक्
पजगा इक्कि पहासिदि
रु देसा नमो देन
~~हसकता~~ रुद्र गारग
वि यो यि मे सि सि
स्वाहा ॥ व्यास १ ॥ रुद्र

संनगरि सुभाइरुडुन विह
रुं सिं अहं नमः ॥ व्यासः ॥
चिं न पतु पा वं न ये किं
मि सि इ वं नु ॥
रुं रुं हिं कं ट स्वाहा ॥ व्या
सः ॥ ॥ धनं या म न नं
पु य मे व न म पु या न न
या गु या रुं ॥ ॥
रुं यी वि रुं रुं आ ग्या रुं

ये य न सि स्वाहा ॥ व्यासः

७ ॥ तं व न पतु पा व नो

न के म इ वं

रुं न म श्री गुरु आ ग्या रुं
स्वा य नं वं रुं रुं रुं किं
स्वा हि म रा म सर कं न
गुरु मा रं श्री गुरु आ ग्या
॥ व्यासः ॥ ॥ धनं या म न नं
रुं रुं या रुं रुं या य रुं
रुं रुं रुं रुं आ ग्या रुं रुं
रुं रुं मा रं रुं म रुं रुं रुं

आन॥ वर॥ योमत्रहेश
रिक्किदिनुद्यारेहोम
गोह
हेशुआयागुहकन
रसिंहकेवायागुहकु
मारिकावायागुहकु
ह्याहो॥ मससाहकन
नयाशारेयायगुआह
रेकेराशारिदिहकुन
रेकोहकु

ऊसिखिगुहआग्याऊ
होहकुहकुह्याहा॥ ७॥
केराकुहकुहकुहो
गोहवाभिमार्होन
होहकुहकुहकुहकु
ऊमहारायागुहकुहकु
हो॥ आन॥ वनकुयगु
मत्रकुह

हेशुहकुह्यागसिंह
होहोहा॥ ध्याहा॥ वको

मन्त्रोत्तराथामन्त्रोत्तर
सुत्रोत्तराथामन्त्रोत्तर
इति सुत्र

आसीत्तनाथोत्तराथ
"अथ १ निम्नया हाथो
मन्त्रोत्तराथामन्त्रोत्तर
के अन्तर्भावात्
इति आग्राह्यं इति आ
ग्राह्यनादेविवनकाहि
वर्जवा राशिर्हृ कं र लोहाः

: यत्तमग्रे मन्त्रोत्तरा
मन्त्रोत्तरा हाद्व्योत्तर
इति मन्त्रोत्तरा हाद्व्योत्तर
यो कावादि हि सन्त्रमनि
वा सन्त्रा र्मुनि मन्त्रप
नि उत्तरा हाद्व्योत्तरा
माथ सन्त्रा इति सन्त्रप
रघा र्मुनि मन्त्र

इति सन्त्रा हाद्व्योत्तरा ॥
मन्त्रोत्तरा हाद्व्योत्तरा
मन्त्रोत्तरा हाद्व्योत्तरा
मन्त्रोत्तरा हाद्व्योत्तरा

ॐ सिव स्थाप्ता आह ७
ओमंत्रमस्तु विदुः ७
होषस्तु तपाव नो नके
ॐ आनर मो वच्चातु हुं फ
ट स्थाप्ता ॥ ७ ॥ आह
कुलद्यातु तस्वा जवकु
तस्वापवस्तु यवकु
हस्वा जवस्तु यवकु

~~हस्वा~~
ॐ गुरुभ्यां गुरुभ्यां स्था

हा ॥ आह ७ विदुः का
वका मस्तु तस्वा ज
मा नापधाना पका सि
कुविता तावु यवकु
स्वाहा यवकु

ॐ उल्ला भद्रं प
त्नी मां हं पत्
नि भो हं भुवति
मा हं काली मे
हं भो हं गोकु
कुरु फल स्वाहा
॥१॥ उल्ला गाने
मीत्र हो

ॐ नमो तं कलि
पि सा च केलिने
दा स्वाहा ॥५॥ पा
नि मां हं खानदि
न वं हं लाया को ह
अमन लाया ॥॥

ॐ भगवती आ
विगो २ अस्य हृदय
हं फलं स्वाहा ॥ बु
पि मन्त्र पात्रा वं सन्तु
या भुं ग द य का वं
मं चो या व पात्रे मं

तु जु इ नं ॥ सप्त
सं भुं या य नि नं ॥
॥ अल ॥ २ ॥

ॐ गुरु आग्याः आकाश रत्न
सारी सारीः सारी सारीः मोक्षये
हुफुत् ज्ञाहाः व्यालः अस
राक वनया पुष्य गुजुनः
ॐ नमो भीमकांड वीरके भाग्या
सिन्धी गुरु नमस्वाहाः व्यालः
भोस नमो सीन्धी सीये गुजुन

॥



15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20